कृषि किरण अंक-9, जून 2020: पृष्ठ: 47-49
http://saaer.org.in

# गाजरघास का प्रबंधन

हरीश कुमार बिजारणियां[1], शंकर लाल बिजारणियां[2], पीयूष चौधरी[3] एवं दुष्यंत परिहार[4]

[1]*विद्यावाचस्पति छात्र, कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)*

[2]*विद्यावाचस्पति छात्र, कृषि महाविद्यालय, स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)*

[3]*विद्यावाचस्पति छात्र, कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)*

[4]*विभाग। एप्लाइड प्लांट साइंस (हॉर्टिकल्चर), बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ*

गाजरघास यानी पार्थेनियम को देश के विभिन्न भागो में अलग अलग नामों से जेसे कांग्रेस घास, सफेद टोपी, चटक चांदनी, गंधी बुटी आदि नामों से जाना जाता है। हमारे देश में 1955 में दृष्टिगोचर होने के बाद यह विदेशी खरपतवार लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर *क्षेत्र* में फेल चुकी है। यह मुख्यत: खाली स्थानों, अनुपयोगी भूमियों, ओद्योगिक *क्षेत्रों* बगीचों, पार्को, स्कूलो, रहवासी *क्षेत्रों*, सड़को तथा रेल्वे लाइन के किनारे आदि पर बहुतायत में पाई जाती है | पिछले कुछ वर्षो से इसका प्रकोप सभी प्रकार की खाद्यान्न फसलों, सब्जियों एवं उद्यानों में भी बढता जा रहा है। वैसे तो गाजरघास पानी मिलने पर वर्षभर फल-फूल सकती है परन्तु वर्षा ऋतु में इसका अधिक अंकुरण होने पर यह एक भीषण खरपतवार का रूप ले लेती है। गाजरघास का *पौधा* 3-4 महीने में अपना जीवन चक्र पूरा कर लेता है तथा एक वर्ष में इसकी 3-4 पीढ़िया पूरी हो लेता है।

**कैसे पहचाने गाजरघास को ?**

- ❖ गाजर के *पौधे* के सम्मान दिखने वाला एक वर्षीय शाकीय *पौधा* जिसकी लम्बाई 1.0-1.5 मीटर तक हो सकते है।
- ❖ तना रोयेदार एवम् अत्यधिक शाखा युक्त होता है।
- ❖ एक पोधा 10,000-30,000 तक बीज देता है,जो बहुत हल्के एवम् पंख युक्त होते है।
- ❖ यह प्रकाश एवम् तापमान के प्रति उदासीन होने के कारण पुरे वर्ष भर उगता एवम् फलता-फूलता रहता है।

**गाजरघास से होने वाले दुष्प्रभाव**

गाजरघास से मनुष्यों में त्वचा संबंधी रोग (डरमेंटाइटिस), एकलिजा, एलर्जी, बुखार, दमा आदि जैसी बीमारियाँ हो जाती है। अत्यधिक प्रभाव होने पर मनुष्यों की मृत्यु तक हो

सकती है। पशुओ के लिए भी यह खरपतवार अत्यधिक विषाक्त होता है। गाजरघास के तेजी से फैलने के कारण अन्य उपयोगी वनस्पतियों को खत्म करने लग जाता है। जैव विविधता के लिए गाजरघास एक बड़ा खतरा बनती है। इसके कारण फसलो को उत्पादकता बहुत कम हो जाती है। इसकी वजह से फसलों की पैदावार 30-40 प्रतिशत कम हो जाती हैं। क्योंकि इस खरपतवार में ऐस्क्युटरपिन लेक्टोन नामक विषाक्त पदार्थ पाया जाता हैं, जो फसलों की अंकुरण क्षमता व बढ़वार पर विपरीत असर डालता हैं। दलहनी फसलों में यह खतरपतवार जड ग्रंथियों के विकास को प्रभावित करता है तथा नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाले जीवाणुओं की क्रियाशीलता को भी कम कर देता है।

**नियन्त्रण के उपाय**

1. खरपतवार के प्रवेश एवम् उनके को रोकने हेतु सख्त कानून बनाये गये है उनका

सख्ती से पालन करना चाहिए व दण्ड का प्रावधान भी रखना चाहिए।

1. वर्षा ऋतु में गाजरघास को फूल आने से जड़ से उखाड़कर कम्पोस्ट एवं वर्मी कम्पोस्ट बनाना चाहिए।
2. घर के आस पास एवम संरक्षित *क्षेत्रों* में गेंदे के पोधे लगाकर गाजरघास के फेलाव व विकास को रोका जा सकता है।
3. अक्टूबर-नवम्बर मे अकृषित *क्षेत्रों* में प्रतिस्पर्धात्मक पोधे जैसे चकोड़ा (कैसिया सिरेसिया एवम् कैसिया तोरा) के बीज एकत्रित कर उन्हे फरवरी-मार्च में छिड़क देना चाहिए। यह वनस्पति गाजरघास की वृद्धि एवम् विकास को कम करती है।
4. वर्षा आधारित *क्षेत्रों* में शीघ्र बदने वाली फसलै जैसे ढैंचा, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि की फसले लेनी चाहिए।
5. अकृषित *क्षेत्रों* में शाकनाशी रसायन जैसे ग्लायफ़ोसेट 1.0- 1.5 प्रतिशत या मेट्रीब्यूजिन 0.3 -0.5 प्रतिशत घोल का फूल आने के पहले छिड़काव करने से गाजरघास नष्ट हो जाती है।
6. ग्रीष्म एवम् शरद ऋतु में अकृषित *क्षेत्रों* में अंकुरित होने पर कुछ बदवार करने के बाद पानी न मिलने के कारण इसका विकास नही हो पाता है पर वर्षा होने पर यही पोधे शीघ्र बढकर बीजो का उत्पादन कर देते है। अत: ऐसे समय इन्हें शाकनाशियो द्वारा नष्ट करना चाहिए।
7. फसलो में गाजरघास को रसायन विधि द्वारा नियत्रण करने के लिए खरपतवार वैज्ञानिक की सलाह अवश्य ले।
8. मेक्सिन बीटल (*जाइग्रोग्रामा बाईकोलोराटा*) नामक कीट को वर्षा ऋतु में गाजरघास पर छोड़ना चाहिए।
9. जगह-जगह संगोष्ठीयां कर लोगो को गाजरघास के दुष्प्रभाव एवम् नियन्त्रण के बारे में जानकारी देकर उन्हें जागरूक करे।
10. मक्का, ज्वार एवम् बाजरा की फसलों से एट्राजिन 1 से 1.50 किलोग्राम सक्रिय तत्व प्रति हेक्टयर बुवाई के बाद प्रयोग लिया जाना चाहिए (अंकुरण से पूर्व)।
11. खरपतवार को उखाड़ते समय दस्तानों और सुरक्षात्मक कपड़े पहनने चाहिए। गाजर घास के ऊपर 20 प्रतिशत साधारण नमक का घोल बनाकर छिड़काव करें।

**गाजरघास को नष्ट करने के लाभ ?**

- ❖ भूमि पर एक स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र की स्थापना।
- ❖ जैवकीय विविधता की सुरक्षा।
- ❖ मनुष्यों एवम् जानवरों के स्वास्थ्य की रक्षा। कृषि उत्पादन में बढोतरी।